



पत्र-पुष्प



निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई-बहनों प्रति शुभ प्रेरणायें (विश्व कल्याण के लिए मधुरता और नम्रता का गुण धारण करो - शुभ प्रेरणायें 23-03-2026)

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, सदा विश्व कल्याण की सेवा पर उपस्थित सभी निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - अव्यक्त मिलन की यह सुहानी घड़ियां, सभी ब्रह्मा वत्सों में एक नया उमंग, नया उत्साह भर देती हैं। देश विदेश से बाबा के हजारों बच्चे मधुबन बेहद घर में भाग-भाग कर पहुंचते और हर प्रकार से अनेक गुण वा शक्तियों से भरपूर होकर जाते हैं। मीठे बापदादा की कितनी कमाल है जो अव्यक्त वतन में रहकर भी अपने बच्चों की गुप्त पालना कर रहे हैं। रिवाइज वीडियो द्वारा अलौकिक महावाक्य सुनते भी सब ऐसा अनुभव करते जैसे डायरेक्ट बापदादा हम बच्चों से मिलन मनाते, हमारे दिल की बातों का रेसपान्ड कर रहे हैं। बाबा की शक्तिशाली दृष्टि, उनकी शुभ भावनाओं के वायब्रेशन पूरे वायुमण्डल में फैल जाते हैं। इस बार पूरी सीज़न के 10 टर्न में देश विदेश के अनेक भाई बहिनें मधुबन घर में पहुंचे और स्वयं को पूरा रिफ्रेश कर, अनेक प्रेरणायें लेकर विश्व कल्याण की सेवा पर गये। अभी फिर अप्रैल के पहले सप्ताह में भारत के मुख्य आमन्त्रित भाई बहिनें तथा कुछ विदेश की टीचर्स बहिनें आपस में मिलकर पूरे वर्ष के लिए स्व-उन्नति और सेवाओं की प्लैनिंग करेंगे।

वर्तमान समय तो अपने अन्तिम पड़ाव के नये-नये नज़ारे दिखा रहा है, वह समाचार तो आप सब सुनते देखते रहते हो। बाबा ने पहले से ही अपने बच्चों को अचानक का पाठ पढ़ाकर एवररेडी, निर्भय और निश्चित बनाया है। अब तो सभी के दिल में यही भावना है कि वापस घर जाने के पहले हम अपने बाबा को पूरे विश्व के कोने-कोने में प्रत्यक्ष करें। सबके मुख से अब यही आवाज निकले, कि यही है, यही है... इसके लिए इस वर्ष सभी मिलकर सेवाओं की खूब धूम मचायेंगे लेकिन सेवाओं के साथ बाबा कहते बच्चे, अपनी सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति बनाने के लिए भी गुप्त पुरुषार्थ चलता रहे। आपका हर संकल्प सर्व के प्रति मधुर और महान हो। हर एक मधुरता और नम्रता का गुण धारण कर बाप की समीपता का साक्षात्कार कराये। जैसे ब्रह्मा बाप के बोल फरिश्तों के बोल, कम बोल और मधुर बोल थे, ऐसे यथार्थ बोल ही बोलने हैं। हर संकल्प, बोल और कर्म में फालो फादर करना है। तो हर एक यही अन्डरलाइन करे कि हमारा एक एक बोल अलौकिक, फरिश्तों के समान हो। कोई एक शब्द भी मधुरता के बिना न हो। चेहरे पर रूहानियत और मुख में मधुरता हो, मन-बुद्धि में सदा शुभ भावना, रहमदिल की भावना, दातापन की भावना हो। हर कदम में फालो फादर हो, यही बापदादा की पालना का रिटर्न है।

बोलो, ऐसा ही लक्ष्य रख अपने तकदीर की श्रेष्ठ तस्वीर बना रहे हो ना! बाकी मधुबन में तो सदा ही बाबा के बच्चों की रिमझिम रहती है। गर्मी की सीज़न में राजयोग शिविर, विंग्स के सेमीनार तथा योग भट्टियों आदि के कार्यक्रम मधुबन के सभी स्थानों पर शुरू हो जायेंगे।

अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी के मोहिनी

मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़



ये अव्यक्त इशारे



महान बनने के लिए मधुरता और नम्रता का गुण धारण करो

1) मधुरता के गुण को धारण करने वाला यहाँ भी महान बनता है और वहाँ भी मर्तबा पाता है। मधुरता वालों को सभी महान रूप से देखते हैं। तो यह मधुरता का विशेष गुण हर बच्चे में होना चाहिए। मधुरता की मधु जिनके साथ है उन्हें हर कार्य में सफलता ही सफलता है। उनके जीवन से असफलता मिट जायेगी।

2) मधुरता का गुण जीवन में तब आयेगा जब अपनी वा दूसरे की बीती को न देख अन्दर के संस्कारों को सरल व नम्रचित बनायेंगे। सरलचित आत्मा का गुण है ही मधुरता। उनके नयनों से मधुरता, मुख से मधुरता और चलन से मधुरता प्रत्यक्ष रूप में देखने में आती है। मधुरता और नम्रता, इन दो विशेष धारणाओं से सदा विश्व कल्याणकारी, महादानी, वरदानी बन जायेंगे और सहज ही स्नेह का सबूत दे सकेंगे।

3) वाचा में सदा सत्यता और मधुरता हो तो वाणी की मार्क्स जमा होती रहेंगी। मधुरता का गुण जीवन में है तो हर बोल मोती समान होंगे। ऐसे लगेगा जैसे बोल नहीं रहे हैं, मोतियों की वर्षा हो रही है। वे ऐसा बोल बोलेंगे जो सुनने वाले सोचेंगे कि ऐसा बोल हम भी बोलें। सबको सुनकर सीखने की, फालो करने की प्रेरणा मिलेगी। ऐसे मधुर बोल का वायब्रेशन सर्व को स्वतः ही खींचता है।

4) आप महान आत्माओं का हर मंसा संकल्प हर आत्मा के प्रति मधुर हो, महान हो। जैसे बाप का स्वभाव सदा हर आत्मा के प्रति कल्याण वा रहम की भावना का है, हर एक को ऊंचा उठाने का, मधुरता और निर्माणता का है। ऐसे अपना स्वभाव बनाओ। अगर तेज़ बोलने का, आवेश में आने का स्वभाव है तो यह भी ब्राह्मण जीवन में बहुत बड़ा विघ्न है। अब ऐसे स्वभाव का परिवर्तन करो।

5) जैसे मीठा खाने और खिलाने से थोड़े समय के लिए मुख मीठा होता है, खुश होते हैं। ऐसे स्वयं ही मीठा बन जाओ तो सदा ही मुख में मधुर बोल रहेंगे। ऐसे मधुर बोल स्वयं को भी खुश करेंगे, दूसरे को भी खुश करेंगे। इसी विधि से सदा सर्व का मुख मीठा करते रहो, सदा मीठी दृष्टि, मीठा बोल, मीठे कर्म हो।

6) किसी भी आत्मा को दो घड़ी मीठी दृष्टि दे दो। मीठे बोल बोल दो तो उस आत्मा को सदा के लिए भरपूर कर देंगे। यह दो घड़ी की मधुर दृष्टि, बोल उस आत्मा की सृष्टि बदल देंगे। दो

मधुर बोल सदा के लिए बदलने के निमित्त बन जायेंगे।

7) मधुरता ऐसी विशेष धारणा है जो कड़वी धरनी को भी मधुर बना देती है। आप सभी को बदलने का आधार बाप के दो मधुर बोल हैं। मीठे बच्चे तुम मीठी शुद्ध आत्मा हो। इन दो मधुर बोल ने ही बदल दिया। मीठी दृष्टि ने बदल दिया। ऐसे ही मधुरता द्वारा औरों को भी मधुर बनाओ। यह मुख मीठा करो। सदा इस मधुरता की सौगात को साथ रखो। इसी से सदा मीठा रहेंगे और मीठा बनायेंगे।

8) मधुरता द्वारा बाप के समीपता का साक्षात्कार कराओ। आपके संकल्प में भी मधुरता, बोल में भी मधुरता, कर्म में भी मधुरता हो - यही बाप की समीपता है इसलिए बाप भी रोज़ कहते हैं - 'मीठे-मीठे बच्चों' और बच्चे भी रेसपान्ड करते - 'मीठे-मीठे बाबा'। यही रोज़ का मधुरता का बोल मधुर बना देता है।

9) मधुरता और नम्रता का गुण झुकना सिखाता है। जितना अभी आप संस्कारों में, संकल्पों में झुकेंगे उतना विश्व आपके आगे झुकेगी। झुकना अर्थात् झुकाना। संस्कार में भी झुकना। यह संकल्प भी न हो दूसरे हमारे आगे भी तो कुछ झुकें! हम झुकेंगे तो सभी झुकेंगे। जो सच्चे सेवाधारी होते हैं वह जब सभी के आगे झुकेंगे तब सेवा कर सकेंगे।

10) मधुरता ही ब्राह्मण जीवन की महानता है। जहाँ मधुरता है वहाँ पवित्रता है। बिना पवित्रता के मधुरता आ नहीं सकती। जितना बुद्धि में नशा हो, उतना ही कर्म में नम्रता और बोल में मधुरता हो। ऐसे नशे में रहने से कभी नुकसान नहीं होगा। सिद्धि को पाने वाले, स्वयं को नम्रचित, निर्माण, हर बात में अपने आपको गुणग्राहक और मधुरता सम्पन्न बनायेंगे।

11) आपका बोल और स्वरूप दोनों साथ-साथ हों - बोल स्पष्ट भी हों, उसमें स्नेह भी हो, नम्रता और मधुरता भी हो। सत्यता भी हो लेकिन स्वरूप की नम्रता भी हो, इसी रूप से बाप को प्रत्यक्ष कर सकेंगे। निर्भय हो लेकिन बोल मर्यादा के अन्दर हों - जब इन दोनों बातों का बैलेन्स हो तब कमाल दिखाई देगी। फिर आपके शब्द कड़े नहीं, मीठे लगेंगे।

12) अगर आप से कोई टक्कर लेता है तो आप उसे अपने स्नेह का पानी दो, आप अपने मधुरता और नम्रता के गुण को नहीं छोड़ो। नम्रता की ड्रेस पहनकर रहो। यह नम्रता ही कवच है, जो

सेफ्टी का साधन है। संस्कारों की रास मिलाने का सबसे सहज तरीका है – स्वयं नम्रचित और मधुरता सम्पन्न बन जाओ, दूसरे को श्रेष्ठ सीट दे दो।

13) नम्रचित आत्मा सहज ही सुखदाता बन सकती है लेकिन अभिमान नम्रचित बनने नहीं देता। नम्रचित नहीं तो सेवा हो नहीं सकती। सेवाधारी की विशेषता सदा नम्रचित, स्वयं झुका हुआ होगा तब औरों को झुका सकेगा। जितना नम्रचित होंगे उतना निर्माण करेंगे। जहाँ निर्मानता होगी वहाँ रोब नहीं होगा, रूहानियत होगी। जैसे बाप कितना नम्रचित बनकर आते हैं, ऐसे फालो फादर।

14) संगठन में सफलता प्राप्त करने के लिए सदा नम्रचित के तख्त पर विराजमान रहो। इसी तख्त पर बैठ, जिम्मेवारी का ताज धारण कर भविष्य की पदवी बनाओ। तख्त से उतरना नहीं, इसी पर बैठकर काम करो तो सफलता मिलती रहेगी। इसके लिए 'पहले आप' का पाठ पक्का हो, इससे आपके संस्कार सबके साथ सहज ही मिल जायेंगे।

15) मधुरता ही महानता है, इससे मन और मुख का कडुवापन समाप्त हो जाता है। क्रोध अग्नि शीतल हो जाती है। बापदादा अपने हर बच्चे को शीतल देवता बनाना चाहते हैं इसलिए मधुरता के गुण को धारण करो। आपका मुखड़ा भी मीठा हो। मधुरता के गुण से भरपूर बनो, जो भी सम्पर्क में आये उसे मधुर बोल वा शक्तिशाली दृष्टि से भरपूर करो।

16) आप बच्चों की चलन में मधुरता और मन्सा में बेहद की वैराग्य वृत्ति हो। दोनों स्मृति रहे तो पास विद आनर्स बन जायेंगे। मधुरता और नम्रता इन विशेष दो धारणाओं से सदा विश्व कल्याणकारी, महादानी, वरदानी बन जायेंगे और सहज ही स्नेह का सबूत दे सकेंगे।

17) आपका हर बोल महान हो। हर मंसा संकल्प हर आत्मा के प्रति मधुर हो। हर एक को ऊंचा उठाने का स्वभाव, मधुरता का स्वभाव, निर्माणता का स्वभाव हो। मेरा स्वभाव ऐसा है, यह कभी नहीं बोलना। मेरा कहाँ से आया! मेरा तेज़ बोलने का स्वभाव है, मेरा आवेश में आने का स्वभाव है। स्वभाव के वश होना यही माया है। अब मायाजीत बनो। अभिमान वा दिलशिकस्त होने के, ईर्ष्या वा आवेश में आने के स्वभाव का परिवर्तन करो।

18) जब एक दो को मीठा खिलाते हो उसमें मुख थोड़े समय के लिए मीठा होता है लेकिन स्वयं ही मीठा बन जाओ, मुख में सदा ही मधुर बोल रहें। जैसे मीठा खाने और खिलाने से खुश होते हो ऐसे मधुर बोल स्वयं को भी खुश करते, दूसरे को भी खुश कर देते। इससे सदा सर्व का मुख मीठा करते रहो, सदा मीठी दृष्टि, मीठा बोल, मीठे कर्म हो।

19) बापदादा अब एक-एक बच्चे के मस्तक में सम्पूर्ण पवित्रता की चमकती हुई मणी देखने चाहते हैं। रूहानियत से चमकते हुए नयन देखने चाहते हैं, बोल में मधुरता, विशेषता, अमूल्य बोल सुनने चाहते हैं और कर्म में सन्तुष्टता, निर्माणता सदा देखने चाहते हैं।

20) संस्कार वा नेचर तो हर एक की अपनी-अपनी है लेकिन सर्व का स्नेही और सर्व बातों में, सम्बन्ध में सफल, मन्सा में विजयी और वाणी में मधुरता तब आ सकती है जब इज़ी नेचर हो। इज़ी नेचर अर्थात् जैसा समय, जैसा व्यक्ति, जैसा सरकमस्टांश उसको परखते हुए अपने को इज़ी कर देवे। इज़ी अर्थात् मिलनसार, मोल्ड कर लेने वाला। इज़ी माना अलबेला नहीं।

21) ब्रह्मा बाप अपने हर बच्चे के चेहरे पर, एक तो सदा रूहानियत की मुस्कराहट देखना चाहते हैं और दूसरा - मुख से सदा मधुर बोल सुनना चाहते हैं। एक शब्द भी मधुरता के बिना नहीं हो। चेहरे पर रूहानियत हो, मुख में मधुरता हो और मन-बुद्धि में सदा शुभ भावना, रहमदिल की भावना, दातापन की भावना हो। हर कदम में फालो फादर हो, यही पालना का रिटर्न दो।

22) आपके हर बोल में मधुरता, सन्तुष्टता, सरलता की नवीनता हो। ब्राह्मण आत्माओं के बोल साधारण बोल न हो। यही महानता और यही नवीनता है। मधुर बोल, मधुर संस्कार, मधुर स्वभाव द्वारा दूसरों का भी मुख मीठा कराते रहो। "सदा अथक भव और मधुर भव" के वरदानों से बढ़ते, उड़ते चलो।

23) जैसे ब्रह्मा बाप के बोल फरिश्तों के बोल, कम बोल और मधुर बोल थे। ऐसे यथार्थ बोल बोलो। कारोबार के लिए बोलना पड़ता है लेकिन वह भी लम्बा नहीं करो। हर संकल्प, बोल और कर्म में फालो फादर करो। हर बोल में मधुरता, नम्रता की महानता हो। इसके लिए स्वयं को निमित्त समझकर हर कार्य करो तब महानता के साथ नम्रता आयेगी और सफलतामूर्त बनेंगे।

24) आपका एक एक बोल अलौकिक हो, फरिश्तों के समान हो। हर बोल मधुर हो। इस बात पर अभी अन्डरलाइन करो तब प्रत्यक्षता होगी क्योंकि अभी तक वाणी की शक्ति व्यर्थ जा रही है, इसलिए वाणी में जो बाप को प्रत्यक्ष करने का जौहर वा शक्ति होनी चाहिए वह कम है, वाचा को व्यर्थ से बचाओ तो बाप को प्रत्यक्ष करने का आवाज बुलन्द होगा।

25) जैसे अन्जान बच्चा नुकसान वाली चीज़ को खिलौना समझता है तो उसे कुछ देकर छुड़ाना पड़ता है, ऐसे जो अल्पकाल का मान शान वा अल्पकाल की इच्छा रखते हैं, उन्हें मान देकर स्वयं निर्मान बन जाओ। उस समय यदि उन्हें शिक्षा देंगे तो टकराव पैदा होगा इसलिए ऐसे समय पर युक्तियुक्त चलन से, परोपकारी बन क्षमा भाव से सम्मान देकर पहले उन्हें समझदार

बनाओ, जिससे वह स्वयं महसूस करे कि यह बात नुकसानकारक है।

26) कोई भी चीज़ को गर्म कर नर्म किया जाता है, फिर मोल्ड किया जाता है। यहाँ भी गर्माई है शक्ति रूप और नर्माई है निर्मानता अर्थात् स्नेह रूप। जिसमें हर आत्मा प्रति स्नेह होगा वही नम्रचित रह सकता है। स्नेह नहीं है तो न रहमदिल बन सकेंगे, न नम्रचित। शक्तिरूप में है मालिकपन और नम्रता में है सेवा का गुण। तो जब यह नर्माई और गर्माई दोनों रहेंगे तब हर बात में मोल्ड हो सकेंगे।

27) जो सरलचित हैं वही मधुरता के गुण सम्पन्न हैं, वही सदा हर्षित रहते हैं। हर्षितचित हैं तो सबको आकर्षित करते हैं। हर्षित का अर्थ ही है अतीन्द्रिय सुख में झूमना। ज्ञान का सुमिरण करते, अव्यक्त स्थिति का अनुभव करते अतीन्द्रिय सुख में झूमना, इसको कहा जाता है हर्षित। ऐसा जो हर्षित रहता है वही आकर्षित करता है।

28) किसके संस्कार सरल, मधुर होते हैं तो वह संस्कार स्वरूप में आते हैं। जब संस्कार बापदादा के समान बन जायेंगे तो बापदादा

के स्वरूप सभी को देखने में आयेंगे। जैसे बापदादा वैसे हूबहू वही गुण, वही कर्तव्य, वही बोल, वही संकल्प अनुभव होंगे। सभी के मुख से निकलेगा यह तो वही लगते हैं।

29) ऐसे नहीं समझो कि हम तो सदैव झुकते ही रहते हैं लेकिन हमारा कोई मान नहीं, जो झुकते नहीं व झूठ बोलते हैं उनका ही मान है—नहीं। यह अल्पकाल का है, लेकिन आप दूरादेशी बुद्धि रखो, यहाँ जितनों के आगे झुकेंगे अर्थात् नम्रता के गुण को धारण करेंगे, तो सारा कल्प ही सर्व आत्मायें आगे आगे नमन करेंगी। सतयुग त्रेता में राजा के रिगार्ड से काँध से नहीं लेकिन मन से झुकेंगे और द्वापर कलियुग में काँध झुकायेंगे।

30) मैजारिटी के सामने सर्विस में बाधा डालने वाला मुख्य विघ्न आता है – मैंने यह किया, मैं ही यह कर सकता हूँ... यह मैंपन आना इसको ही कहा जाता है ज्ञान का अभिमान, बुद्धि का अभिमान, सर्विस का अभिमान, इन रूपों में ही विघ्न आते हैं। इस प्रकार के विघ्नों को समाप्त करने के लिए सदा एक शब्द याद रखना कि मैं निमित्त हूँ। निमित्त बनने से ही निराकारी, निरहंकारी और नम्रचित, निःसंकल्प अवस्था में रह सकते हैं, यही धारणायें वायुमण्डल को निर्विघ्न बना देती हैं।

(त्रिमूर्ति दादियों के अनमोल वचन - रिवाइज क्लासेस)

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

20-03-2026

मधुबन

“अपने मन पर पूरा कंट्रोल रखो तो लोगों को आपसे लाइट का साक्षात्कार होगा और उनके व्यर्थ संकल्प समाप्त हो जायेंगे”

गुल्जार दादी जी 23-11-11

समर्पण का अर्थ क्या होता है? समर्पित माना सब कुछ अर्पित। हमने सब-कुछ बाबा के अर्पण कर दिया। बाबा ने मुख्य बात कही कि आजकल सबसे ज्यादा तो व्यर्थ संकल्प चलते हैं, वही खत्म होने चाहिए। तो यह किसने चेकिंग की कि व्यर्थ संकल्प चलते हैं या खत्म हो गये हैं? जो समझते हैं हमारे व्यर्थ संकल्प नहीं चलते हैं वो हाथ उठाना। व्यर्थ संकल्प माना कोई बुरे नहीं हैं, लेकिन जितना सोचना चाहिए उससे ज्यादा कोई भी बात की डीप में जाते हैं, तो वो भी व्यर्थ हुआ ना। बाकी बुरे संकल्प, वो अलग चीज़ हैं लेकिन जो हमारे सोचने की बात नहीं है और वही सोच चल पड़ता है तो वो भी तो व्यर्थ हुआ ना। उस व्यर्थ संकल्प से टाइम भी व्यर्थ जाता है।

तो बाबा ने जो काम दिया है वो होना चाहिए क्योंकि बाबा ने कहा है अन्त में ऐसी बातें आयेंगी जो आपको फुलस्टॉप लगाना

पड़ेगा यानि ज्यादा टाइम सोचने में न चला जाए। एक सेकण्ड में फुलस्टॉप लगाना पड़ेगा क्योंकि अन्त के समय मनुष्यों की बुद्धि बहुत खराब होगी, और यह जो भटकती हुई आत्मायें जिन्न भूत हैं, वो भी बहुत ज्यादा अपना वार करेंगे, सबकी अन्तिम घड़ी होगी, तो अन्तिम घड़ी में जैसे जोश आता है हम करके ही देखें। तो वो तो होगा ही इसलिए बाबा ने एक दृश्य दिखाया था कि एक कुमारी योग में बैठी है और खराब संकल्प वालों की दृष्टि वृत्ति उसके ऊपर पड़ती है, वह उसी वृत्ति से उसके आगे आगे आ रहे हैं। तो जैसे वो आगे आगे बढ़े वैसे उनको कुमारी के बजाए लाइट ही दिखाई दी। कुमारी दिखाई नहीं दी एकदम लाइट दिखाई दी, तो वो डर गये और उनका संकल्प स्टॉप हो गया। तो बाबा कहते हैं अन्त में ऐसी अनेक बातें आयेंगी, उसमें आपको बिल्कुल ही लाइट रूप होना पड़ेगा। कोई किसी भी

संकल्प से आवे लेकिन वो संकल्प उन्हीं का पूरा नहीं हो, उसके लिये आप फरिश्ते रूप में उन्हीं को दिखाई दें। लेकिन यह तब होगा जब हमारा मन के ऊपर एक सेकण्ड में कन्ट्रोल हो। जहाँ हम मन को ठहराना चाहें वहाँ ही उसी संकल्प में मन ठहर जाए। तो यह प्रैक्टिस अभी करनी पड़ेगी। उस समय पेपर के टाइम थोड़ी बहुत हलचल होती है। लेकिन हमारी इतनी प्रैक्टिस हो जो हम कहें स्टाप तो स्टाप हो जाये। जैसे बाप के तीन रूप हैं बाप, शिक्षक, सतगुरू, वैसे हमारे भी तीन रूप हैं ब्राह्मण, फरिश्ता और देवता। कभी कोई रूप धारण करो तो कभी कोई रूप धारण करो। अभी से हमारी यह प्रैक्टिस चाहिए। समझो कोई भी बात देख करके व्यर्थ संकल्प चलते हैं या फ्री होते हैं तो कन्ट्रोलिंग पॉवर कम हो जाती है इसलिए व्यर्थ संकल्प आते हैं। तो वो व्यर्थ संकल्प हम एक सेकण्ड में स्टॉप कर सकते हैं? यह प्रैक्टिस अभी ही करनी पड़ेगी!

तो रात्रि को सोने के पहले हर एक सारे दिन की रिजल्ट बाबा को सुनाये। पहले जमाने में सारा परिवार साथ में बैठता था और लेन-देन करते थे। आजकल वो जमाना ही बदल गया लेकिन बाबा तो बड़े ते बड़ा है ना, तो सारी रिजल्ट बाबा को बतानी चाहिए। हम इस बंधन में स्वयं को बांधेंगे तो अपनी चेकिंग कर सकेंगे। बाबा ने यह भी कहा है कि मानो आपसे छोटी-मोटी गलती हो गयी, व्यर्थ संकल्प चलना भी तो गलत है ना! लेकिन उसकी माफी बाबा से अभी ले लो। अगर अभी माफी ले लेंगे, तो उसमें यह फायदा होता है कि जो कोई भी चीज़ दे दी तो दी हुई चीज़ अगर वापस आ जाती है तो सोचा जाता है कि क्या दी हुई चीज़ मैं अपने पास रख सकती हूँ! तो बाबा को दिल से दे दी, तो बाबा उसकी सज़ा क्या देगा! बाबा तो और ही पॉवर भरेगा। इसलिए बाबा को सुनाकर माफी ले लो। तो धर्मराजपुरी में जाना नहीं पड़ेगा। तो रात को सोने के पहले यह जरूर करना चाहिए जिससे नींद बहुत अच्छी आती है, आप करके देखना। जैसे दो घण्टे की नींद में अगर संकल्प स्वप्न आदि कुछ नहीं हुआ, दिमाग खाली है तो ऐसे लगता है जैसे हम चार घण्टे सोके उठे हैं। दो घण्टे का सुख जैसे चार घण्टे का लगता है। तो यह जरूर करना चाहिए, तो रहेगा कि मेरे को बाबा को सुनाना है। बाबा क्या है वो तो हमको पता है। तो बाबा को सुनाना है तो आपकी चेकिंग ऑटोमेटिकली चलेगी। रोज़ का रोज़ बाबा को दे दो और माफी ले लो तो हम कर्मातीत होते जायेंगे। सभी को कर्मातीत तो होना है ना। इस बारी बाबा ने खास मधुबन वालों को भी कहा है कि अगर रिजल्ट ठीक निकली तो मैं आऊंगा, मिलूंगा। तो इतनी बाबा ने जब ऑफर की है, तो हम लोगों को

अटेन्शन भी इतना देना चाहिए।

तो बाबा ने जो कहा कि व्यर्थ संकल्प नहीं चलें, यह चेकिंग किसने की? रिजल्ट ठीक रही? चार्ट भी सिर्फ कॉपियों में भरने के लिये नहीं रखना, चार्ट रखना माना चेन्ज। हम भी पहले-पहले रोज़ चार्ट लिखते थे वो ठीक है। लेकिन यह चेक करें कि हमारे में फर्क पड़ रहा है? चार्ट क्यों लिखते हैं? स्वयं को चेंज करने के लिए लिखते हैं ना क्योंकि किसी समय कुछ भी हो सकता है। बाबा अचानक का पाठ तो हमको दे ही रहा है। तो हमारा पुरुषार्थ ऐसा है? मैंने देखा है पुरुषार्थ सभी का चलता है लेकिन चलते-चलते पुरुषार्थ में दृढ़ता कम हो जाती है। जिस समय संकल्प किया, उस समय तो दृढ़ता होती है फिर जब कर्म में आते हैं, बातचीत करते हैं, जो भी ड्युटीज़ होती हैं उसमें आते, संगठन में आते दृढ़ता कम हो जाती है। और दृढ़ता ही सफलता की चाबी है, अगर दृढ़ता कम हो गई तो सफलता जो चाहते हैं वो नहीं होती है। होती है लेकिन जैसा चाहते हैं वो नहीं होगी। तो बाबा ने अटेन्शन खिंचाया है, उसी अनुसार हम क्या समझते हैं! अटेन्शन है?

आज से मेरा संकल्प है कि हर एक को रोज़ अपना दृढ़ता का चार्ट देखना चाहिए। जो भी मैंने पुरुषार्थ में संकल्प किया, उसमें दृढ़ता चलती रही या थोड़ा अलबेलापन आ जाता है, ठीक है कर तो रहा हूँ, हो जायेगा, रहेगा थोड़ेही, टाइम पर पूरा हो जायेगा... ऐसे दृढ़ता कम करने के संकल्प जो आते हैं वो हमको ढीला कर देते हैं। और बाबा को रोज़ अपना सारे दिन का चार्ट देवें जैसे बड़े को देना ही है, ऐसे नहीं बाबा को दिया ना, ऐसे नहीं दृढ़ता से दिया! अपने फायदे को सोच करके दिया या ऐसे ही सुना है तो देना ही है। तो अब कोई प्लैन बनाओ, बना सकते हैं? कैसे बनायेंगे? बना तो सकते हो, शाबाश है लेकिन कैसे बनायेंगे? अपना अपना बनायेंगे या कोई गुप बैठ करके बनायेगा? क्या सोचा है? तो पक्का है। कल से सभी रात्रि को बाबा को अपनी रिजल्ट देके और जो भी कुछ हो गया उसकी माफी भी अभी ले लो। बाबा के हिसाब से तो व्यर्थ संकल्प भी गलती है, तो व्यर्थ संकल्प हमारे चले? समझो कोई चीज़ देखी, यह हो रहा है, उसके संकल्प चल पड़ते हैं यह क्यों हुआ, क्या है, कैसे है, यह कहाँ तक चलेगा, यह नहीं होना चाहिए, मतलब ऐसे फालतू संकल्प चलते हैं.. क्योंकि मेरी जिम्मेवारी है ही नहीं इसकी। तो चेक करना है लेकिन पता कैसे पड़े कि चेक आपने किया या नहीं? हम तो कनेक्शन में आते ही नहीं हैं, उसकी क्या विधि हो? अपने ही मन को पक्का करना होगा क्योंकि रोज़ तो कोई आपस में मिलता ही

नहीं है तो अपना ही मास्टर बनके अपने को चेक करना पड़ेगा, और कोई विधि नहीं है।

इसमें अपने आप ही हेड बनना पड़ेगा। तो एकदम दृढ़ निश्चय करो कोई काम भी इसेन्सीयल हो, दो अक्षर लिखना है, बस। डायरी रखनी है फिर कभी भी बाबा डायरी मंगाके देख सकता है। डायरी में ज्यादा नहीं लिखना है व्यर्थ संकल्प चले? कितना टाइम चले? कभी कभी एक ही टाइम पर व्यर्थ संकल्प 10 मिनट भी चल सकते हैं, 2 मिनट भी चल सकते हैं लेकिन

टोटल सारे दिन में कितना व्यर्थ संकल्प चले? या मैंने जो लक्ष्य रखा सवेरे कि आज मैं इस बात पर खास अटेंशन दूँगा, तो वो भी चेक करो कि सारे दिन का जो हमने संकल्प रखा, स्वरूप का वो मेरा ठीक रहा या नहीं? बस। तो यह कर सकते हैं? हो सकता है? क्योंकि हमारा बाबा से प्यार है, लेकिन प्यार में यह व्यर्थ का जो विघ्न पड़ता है उसको मिटाना है। बाबा का आप सबसे प्यार है तो बाबा कोई भी बात अगर सुनते हैं तो बाबा को अच्छा नहीं लगता है। तो हम जिस लक्ष्य से आये हैं, वो लक्ष्य हमारा पूरा हो रहा है या नहीं?

दादी जानकी जी की अनमोल शिक्षायें “पवित्रता की धारणा से ही कर्म व विचारों में सत्यता आयेगी”

11-11-06

अशरीरी बनने की ऐसी प्रैक्टिस हो जो आत्मा पंछी अपने आप उड़ने लग पड़े। पंछी उड़ने की कोई प्रैक्टिस नहीं करता है। वैसे आत्मा शरीर छोड़ने और धारण करने में अभ्यासी है। एक ही शरीर में कभी रहती नहीं है, पर वो है कर्मों अनुसार। अभी हमारे विकर्म विनाश हो जायें, कर्मों का हिसाब-किताब चुक्तू हो जाये तो आत्मा उड़ने लग पड़ेगी। शरीर में होते भी ऐसी स्वभाविक अवस्था रहे, शान्तिधाम घर जाना है।

बाप, टीचर, सतगुरू एक ही है, स्कूल हमारा एक ही है जिसमें सब नये पुराने इकट्ठे पढ़ते हैं। यहाँ के वातावरण और संगठन के एकाग्रता की शक्ति से सबको सब बातें समझ में आ जाती हैं। फिर मन की चंचलता छूट जाती है। जहाँ हमारा मन होगा वहाँ हमारा धन जायेगा। बाबा ने हम सबको छोटे धन्धे से छोड़ा दिया है तो कितना धन की बचत हो जाती है। तो हमारे पास खजाने बहुत हैं क्योंकि न व्यर्थ समय गँवाते हैं, न संकल्प गँवाते हैं। झूठ तो हम जानते ही नहीं हैं। सच्चाई से कमाई करने में बड़ा मजा आया है। ऐसी कमाई करने में मेहनत होती है, बिना मेहनत कोई कमाई नहीं कर सकता है। थोड़ा केयरलेस होगा तो गँवा लेगा। तो ये हमारी पढ़ाई भी है, सच्ची कमाई भी है और दान भी करते हैं। तो कमाई में मेहनत करनी पड़ती है, पढ़ाई में अटेंशन देना पड़ता है लेकिन दान में कुछ नहीं करना पड़ता है।

ज्ञान सुनते-सुनते अन्धे को आँख आ जाती है यानि रास्ते का पता चल जाता है। इतना अच्छा मीठा ज्ञान बाबा देता है,

किसको सुनाओ तो उन्हें बहुत अच्छा लगता है। ब्रह्माकुमार बनना कोई सहज नहीं है, पर बनना अच्छा लगता है।

यज्ञ में रहके, सेवा करके समय को सफल करने का मुझे भाग्य मिला है। तो अब हमें पुरानी दुनिया की याद आ नहीं सकती। संगम पर हम ऐसी तकदीर बना रहे हैं, ऐसी ऊंची कर्म रेखा खींचने की कलम बाबा ने दे दी है। एक बाबा दूसरा संकल्प में दृढ़ता, यह है कलम। तो ऐसा हमारा बाबा याद करना भी सिखाता है, ब्रह्मा-बाबा को कभी कोई मित्र-सम्बन्धी आदि याद आया ही नहीं होगा। इतनी अलौकिकता जीवन में आये तो तकदीर अच्छी है। सोच-विचार में या कर्म में साधारणता है तो तकदीर ऊंची नहीं बनती है। मुझे करना क्या है? मुझे पवित्रता में पक्का बनना है। क्षत्रिय रहेगा तो उसकी बुद्धि यहाँ रहेगी नहीं। बैठकर यज्ञ सेवा करूँ, ये उसको ख्याल नहीं आयेगा। पहले माइन्ड में पवित्रता है, फिर वृत्ति, दृष्टि में है फिर कर्म में है। तो प्युरिटी में पीस है। प्युरिटी में कमी है तो पीस की भी कमी होगी।

अपने पुरुषार्थ से पूरा वर्सा कोई भी ले सकता है। बुद्धि बाप के तरफ लग जाये, नर्कवासियों के साथ कोई अटैचमेन्ट न हो। मोटे विकार तो नुकसानकारी हैं लेकिन क्रोध, मोह, ज्यादा हंसीकुड़ी की आदत है तो वो भी नाम खराब कर देंगे। सुस्ती आई, बहाना बनाया तो भी नाम खराब। बाबा का नाम खराब नहीं करते हैं, अपना नाम खराब करते हैं। कोई को सदा ध्यान रहता है कि मैं बाबा का नाम बाला करूँ। तो वो हर बात में

ध्यान रखते हैं। पवित्रता के बिगर विचारों में और कर्म में सत्यता आ नहीं सकती। मिक्सचर होगा। ताकत मिलती है सत्यता से। जो सच्चे बच्चे हैं उनके हर कार्य में बाबा मदद करता है। उससे तकदीर अच्छी बन गई तो हम कितने भाग्यवान हैं!

तो सदा याद रखना चाहिए कि हम यात्रा पर हैं। डिटैच भी

रहना है, लविंग भी रहना है। बैलेंस चाहिए। तो बाबा रोज़ जो अच्छी अच्छी बातें सुनाता है उन्हें धारण करो। सिर्फ निमित्त बनो तो तेरे भाने सर्व का भला, फिर है चढ़ती कला से उड़ती कला, अपने आप उड़ करके घर चले जायेंगे। फिर जब सतयुग आयेगा हम उस घड़ी आयेगे, पीछे नहीं आयेगे।

दादी जानकी का दूसरा क्लास 12-11-06

“सदा मुस्कराना है तो किसी के भाव-स्वभाव में नहीं आओ, न दुःख दो ना दुःख लो”

अर्जुन माना और सब जनों से न्यारा। तो अभी इसके लिए मेरे को क्या करना है? अन्दर से आता है - अतीन्द्रिय सुख में रहना है क्योंकि गोप-गोपियों के अतीन्द्रिय सुख का गायन संगमयुग का है। कभी इन्द्रियों द्वारा सुख पाने की इच्छा नहीं है, इन्द्रियाँ अच्छी तरह से सेवा करते सुख में रहती हैं। इन्द्रियों द्वारा सुख नहीं चाहिए। खाने, घुमने, पहनने की, इन्द्रियों द्वारा सुख पाने की कोई इच्छा नहीं है। अतीन्द्रिय सुख में रहने के लिए सेवा है। और सेवा में सुख उसको मिलता है जो मुस्कराते रहते हैं। मुस्करायेगा वो जो किसके भाव स्वभाव में नहीं आयेगा। जो गिनती करता है - यह ऐसा करता, यह वैसा करता तो वो क्या सुख पायेगा? अतीन्द्रिय सुख में वही रह सकता जो दिल से कहता है कि मैं भाग्यवान हूँ मुझे खटिया है, कुटिया है, खाने के लिये, सेवा करने के लिये सब अच्छा है।

एक हैं जो सारा दिन अपने ही दुःख में दुःखी रहते हैं। दूसरा - जरा कोई दुःख देता है तो दुःख लेते रहते हैं। तीसरा किसी के दुःख को देखकर दुःखी हो जाते हैं। चौथा - किसी को सुखी देख करके भी दुःखी होते हैं। अभी अपने से पूछो हम कहाँ हैं? कभी दुःख न लेना, न देना। भगवान कहता है और

कुछ न करो पर यह काम तो करो कि हर बात में खुश रहो। खेल है ना! एक मिनट में एक बात होगी, दूसरे मिनट में दूसरी बात होगी। अगर खेल नहीं समझेंगे तो न देख सकेंगे, न प्ले कर सकेंगे। दोनों काम से गये। तो कोई भी इस तरह से शक्ल न बनाये।

प्रीत बुद्धि वाले के आगे जो बात सामने आई विजयन्ती। कभी उसके चेहरे पर हार नहीं आयेगी। नेवर। ड्रामा की नॉलेज से, बाबा की याद से नर्धिग न्यु। यह पाण्डव और शक्तियों का भाग्य है। कौरवों को मनी और मर्तबा चाहिए। पाण्डव क्या कहेंगे? प्रभू तू है, सबकुछ है। बाबा आप हैं तो सबकुछ है। बस। सारे विश्व से चुन-चुन करके बाबा ने यहाँ इकट्ठा कर लिया है। उनकी बुद्धि में यही है कि बाबा है तो सबकुछ है। जो एकाँनामी और खुशी से चलते और यज्ञ को भी चलाते हैं, उसका तो बाबा भी गुण गाता है। वो कहाँ भी रहते खुश रहते हैं। तो अतीन्द्रिय सुख में रहना और अन्दर में स्वीट साइलेंस में रहना, विनाश के पहले सब सुख शान्ति सम्पन्न बनें, औरों को बनने में सहयोग दें - यह है भावना। तो सबको सुख दो, खुशी दो और खुशी में रहो। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

1) बाबा हम बच्चों को कहता बच्चे तुम मेरे होलीएस्ट, हाइएस्ट और रिचेस्ट बच्चे हो। साथ-साथ बाबा हमको ऊंची चोटी पर ले जाने के लिए रोज़ बुद्धि की यह ड्रिल कराता कि बच्चे एक सेकण्ड में इस साकारी दुनिया से पार आकारी और निराकारी दुनिया में चले जाओ। ड्रिल करो - अभी अभी साकारी, अभी-अभी आकारी और अभी-अभी निराकारी।

2) सेकेण्ड में उड़ती कला का अनुभव करने के लिए बुद्धि इतनी हल्की हो जो किसी भी घड़ी इस देह से न्यारी बन जावे। बार-बार यह बात बाबा सुनाता है कि तुम अपने बुद्धि पर बोझ अनुभव नहीं करो। कार्य-व्यवहार करो परन्तु अपने को मैं करता हूँ या मेरा यह काम है, यह मैं और मेरे का बोझ अपने सिर पर नहीं रखो। जिम्मेवार बाबा है, हम निमित्त उनकी श्रीमत पर चलते चलें।

3) समय तीव्र गति से चलता रहता, तो हमें भी ऐसा ही तीव्रगति से अपने को बाबा के इशारों अनुसार पुरुषार्थ करना है और पुरुषार्थ का लक्ष्य है सिर्फ स्वयं ही स्वयं अटेन्शन रखो। अटेन्शन है तो बुद्धि सहज अनुभव करेगी, अटेन्शन होगा तो सम्पन्नता तक पहुंचने में मेहनत या बोझ अनुभव नहीं होगा। इसके लिए समय प्रति समय जो सम्पन्न बनने के लिए बाबा ने ईशारे दिये हैं वह याद रखो, उन पर मनन-चिंतन करो।

4) सबसे पहले हर एक अपने आपसे पूछो कि स्वयं में फेथ है कि मैं पुरुषार्थ कर लास्ट सो फास्ट आऊंगा? मैं ही सम्पन्न बना था और बनूंगा? मेरे संस्कार कहां अथवा पुराने कोई भी बन्धन हैं, मैं उन सब संस्कारों को, बन्धनों को पुरुषार्थ कर परिवर्तन कर सकता हूँ?

5) सूक्ष्म में भी यह संकल्प तो नहीं आता कि ऐसी स्थिति तो मेरे लिये बड़ी मुश्किल है! आज से हरेक इस सूक्ष्म कमजोरी के संकल्प को बाबा के सामने दान कर दो। जबकि बाबा कहता है तुम बच्चों से मेरा वायदा है कि तुम एक कदम आगे बढ़ो तो मैं दस कदम क्या 100 कदम आगे आऊंगा। “हिम्मते बच्चे मददे बाबा।” तुम निश्चयबुद्धि बनो तो विजय अवश्य समाई हुई है।

6) सबसे पहला चाहिए स्वयं ही स्वयं पर सम्पूर्ण फेथ। फुल फेथ रखो तो बाबा की मदद आटोमेटिक मिलेगी। यह भी एक बहुत बड़ा वरदान मिल जाता। तो पहले स्वयं पर फेथ हो फिर बाबा के ऊपर फेथ हो। साथ-साथ यह भी फेथ चाहिए कि हम कल्प पहले वाले वही बाबा के बच्चे हैं जो कल्प पहले भी विजयी बने हैं, जिसका यादगार वैजयन्ती माला है।

7) बाबा ने हमें तीव्र पुरुषार्थ कराने लिये समय दिया है, जैसे युनिवर्सिटी में भी टाइम होता कि यह कोर्स इतने समय में पूरा करना है फिर पेपर होगा। तो हमें भी बाबा सम्पन्न बनने के लिये टाइम देता है। फिर बीच-बीच में पेपर भी लेता है। उस पेपर में पास होने के लिए अमृतवेले जब उठते हैं तो अपनी सम्पन्नता की स्टेज को याद करो।

8) हमारे सामने सम्पन्नता की स्टेज है - ब्रह्मा बाबा। साकार में भी ब्रह्मा बाबा सम्पूर्ण बन प्रैक्टिकल में फरिश्ता स्थिति का हम सबको अनुभव कराते रहे और अभी उसी सम्पन्न फरिश्ता रूप से अव्यक्त वतन में भी हम बच्चों से रूहरिहान करते अथवा बाप-दादा मिलकर इस साकार दुनिया में भी आते। तो सम्पन्नता का एकजाम्बुल साकार है, साकार सो आकार बाबा, निराकार बाबा।

9) हमें भी ब्राह्मण सो फरिश्ता सो देवता बनना हैं। तो हमारी सम्पूर्णता के समीपता की स्थिति है कि पहले हम अपने को

फरिश्ता बनावें। फरिश्ता अर्थात् जो इस देह और देह के बन्धन हैं, उन बन्धनों से मुक्त। जो भी पुराने संस्कार-स्वभाव हैं, दृष्टि वृत्ति है, वह सब हमारी परिवर्तन हो जाए। तो इन सबमें कितने परसेन्ट परिवर्तन हुआ है? मास्टर बन खुद ही खुद चेक करें क्योंकि यह पुराने स्वभाव-संस्कार ही हमारे बन्धन हैं और इन्हों को परिवर्तन करना उसको ही कहेंगे बन्धनमुक्त अर्थात् जीवनमुक्त बनना।

10) सबसे पहले खुद से पूछना हैं कि इस जीवन में मैं आत्मा सभी सूक्ष्म वा स्थूल बन्धनों से स्वतंत्र हूँ? मुक्त हूँ या मेरे संस्कार-स्वभाव जंजीर की तरह बन्धन में रखते हैं? जरा भी कोई बन्धन होगा तो कभी भी अतीन्द्रिय सुख का अनुभव नहीं होगा। जो खुशी होनी चाहिए वह कम हो जायेगी।

11) बन्धनमुक्त की निशानी है - अतीन्द्रिय सुख और अतीन्द्रिय सुख में हैं तो जीवनमुक्त स्थिति है। तो अपने से पूछो मैं एवरहैपी हूँ? जो बाबा कहते हैं “सम्पन्न फरिश्ता भव” उसका मैं कहाँ तक खुद में अनुभव करता/करती हूँ? दूसरा - अगर लक्ष्य है कि मैं सम्पन्न फरिश्ता बनू तो लक्ष्य प्रमाण लक्षण धारण किये हैं?

12) ज्ञान के जो भी गुह्य राज हैं, उन्हें समझकर कर्म-अकर्म और विकर्म की गुह्य गति को जानकर श्रेष्ठ कर्म करते हैं? विकर्मों को खत्म कर मैं दिनोदिन अकर्म बनती जा रही हूँ? जो संस्कार कर्मों का खाता बनाते, मैं उन संस्कारों को, कर्मों के हिसाब-किताब को भस्म कर अकर्म बनती जा रही हूँ? कोई भी संस्कार के वश कर्म होता तो वह अकर्म नहीं बनता, परन्तु कभी कर्म, कभी विकर्म हो जाता। जिसको कहा जाता मायाजीत नहीं परन्तु माया के वश हो गया। फिर वृत्ति जाती, इच्छा होती, पुराने व्यर्थ संकल्प चलते, देह-अभिमान होता। अनेक प्रकारों के मान, शान आदि का स्वार्थ होता। अब मैं इन सभी से मुक्त बनूँ, उसके लिये अपने पास्ट कर्मों को भस्म करना है, अब ऐसा कोई कर्म न हो जो फिर कोई कर्म का खाता बनें। तो हम अपनी ऐसी सम्पन्न स्थिति बनावें, मुक्त बनें जिससे विथ ऑनर पास हों।

13) कई कहते हैं मैं सच कहती हूँ कि मेरे में सहन करने की शक्ति नहीं है। ऐसा कहकर डनलप का तकिया नहीं देना है। हमें मेहनत करनी है, कोई भी शक्ति की कमी है, तो उसको योगबल से फुल करो। हम नई दुनिया का निर्माण करने वाले कहें, मेरा नाम तो है निर्माण करने वाली परन्तु मैं तो मान, शान की भूखी हूँ, तो वह क्या निर्माण करेंगी! अच्छा। ओम् शान्ति।